ALL INDIA FORUM AGAINST PRIVATISATION (AIFAP)

AN ATTACK ON ONE IS AN ATTACK ON ALL!

Website: https://aifap.org.in
Email: contact@aifap.org.in
WhatsApp Number: +918454018757

23/02/2024

प्रति,
अध्यक्ष एवं सीईओ,
रेलवे बोर्ड,
रेल भवन, नई दिल्ली

विषय: हावड़ा में 22.01.24 से प्रिंटिंग प्रेस बंद।
संदर्भ: पीसीएमएम/ईआर पत्र संख्या पीआरजी एंड स्टाई/क्लाउसर/2023 दिनांक 17.01.24।

आदरणीय महोदया,

ऑल इंडिया फोरम अगेंस्ट प्राइवेटाइजेशन (AIFAP) 22 जनवरी, 2024 से हावड़ा प्रिंटिंग प्रेस को बंद करने के प्रशासन के फैसले का कड़ा विरोध करता है। यह निर्णय भारतीय रेलवे के सुरक्षित और सुचारू संचालन के खिलाफ है।

इस प्रिंटिंग प्रेस का निर्माण 164 साल पहले ब्रिटिश शासन के दौरान किया गया था। औपनिवेशिक शासकों ने महसूस किया कि रेलवे के लिए अपना स्वयं का मुद्रणालय होना आवश्यक है।

2000 से पहले भारतीय रेलवे में 19 प्रिंटिंग प्रेस थे। 2007 में इसे घटाकर 14 कर दिया गया, फिर 2010 में इसे घटाकर 9 कर दिया गया। 2017 में रेलवे बोर्ड ने प्रिंटिंग प्रेस की संख्या और घटाकर 5 कर दी।

इन सभी 5 प्रिंटिंग प्रेसों में 2014 में 21 करोड़ रुपये की लागत से महंगी रोटाटेक प्रिंटिंग मशीनें आयात की गईं और स्थापित की गईं।

इन 5 में से केवल 3 ही 2024 की शुरुआत में काम कर रहे थे, अर्थात् हावड़ा, मुंबई और सिकंदराबाद में। अब इस साल की शुरुआत में तीनों प्रेस को भी बंद करने का नोटिस जारी कर दिया गया है।

इन सभी उपयोग योग्य और सेवा योग्य मशीनों को बाजार में कबाड़ के रूप में

या सेकेंडहैंड आधार पर निपटाना भारतीय रेलवे के लिए एक जबरदस्त नुकसान के साथ-साथ लोगों के पैसे की एक बड़ी बर्बादी है।

हावड़ा प्रिंटिंग प्रेस जिसमें वर्तमान में 350 कर्मचारी कार्यरत हैं, मुख्य रूप से पीआरएस (यात्री आरक्षण प्रणाली) टिकट, यूटीएस (अनारक्षित टिकट प्रणाली) टिकट, थर्मल टिकट, मनी वैल्यू फॉर्म, लाइन क्लीयरेंस फॉर्म, आरक्षण फॉर्म, मासिक रियायत फॉर्म पीएन शीट्स, सर्विस रिकॉर्ड बुक और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज प्रिंट करता है। प्रिंटिंग प्रेस बंद होने से इन सामग्रियों की आपूर्ति श्रृंखला बुरी तरह प्रभावित होगी और अंततः भारतीय रेलवे की सुचारू और सुरक्षित कार्यप्रणाली प्रभावित होगी।

इन वस्तुओं की निजी कंपनियों को आउटसोर्सिंग पिछले कुछ समय से चल रही है। लेकिन आउटसोर्सिंग का अनुभव भारतीय रेलवे के लिए बेहद विनाशकारी रहा है। निजी कंपनियाँ इन फॉर्मों की आपूर्ति की समय सीमा को बनाए रखने में सक्षम नहीं हैं और ऐसे कई मामलों में प्रिंटिंग प्रेस कर्मचारियों को आगे आकर कमी की आपूर्ति करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। साथ ही, भारतीय रेलवे को आउटसोर्सिंग की लागत भी बहुत अधिक है। उदाहरण के लिए, हावड़ा प्रिंटिंग प्रेस द्वारा 38 रुपये प्रति रोल पर यूटीएस टिकट का उत्पादन किया जा रहा था। निजी कंपनी प्रति रोल 64 रुपये वसूल रही है, हावड़ा प्रिंटिंग प्रेस में प्रति रोल 110 रुपये में थर्मल टिकट का उत्पादन किया जा रहा था जिसके लिए निजी कंपनी प्रति रोल 170 रुपये चार्ज कर रही है।

प्रिंटिंग प्रेस के इंजीनियर और कर्मचारी इस क्षेत्र में अत्यधिक अनुभवी और कुशल हैं। अन्य कार्यों में उनका उपयोग उनके कौशल और अनुभवों का जबरदस्त दुरुपयोग है, जिसके परिणामस्वरूप अंततः मानव घंटों और राजस्व का भारी नुकसान होगा।

इन सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए, सर्व हिंद निजीकरण विरोधी फोरम (AIFAP) हावड़ा प्रिंटिंग प्रेस को बंद करने के रेलवे अधिकारियों के फैसले की कड़ी निंदा करता है और आपसे इसके प्रस्तावित बंद करने को रोकने का आग्रह करता है।

आपका विश्वासी,

डॉ. ए. मैथ्यू संयोजक, AIFAP
कॉपी: रेल मंत्री, भारत सरकार; महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे